कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष

Ashish Kumar Thakur
B.A.-1, History (H+S), paper-1
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur
L.N.M.U. Darbhanga.

कन्नौज संघर्ष का कारण :-

(i) हर्ष के बाद उत्तर भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगर होने के कारण
(ii) गंगा नदी के किनारे स्थित होने के कारण व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होना।
(iii) गंगा तथा यमुना के बीच स्थित होने के कारण उत्तर भारत का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र।
(iv) तीन महाशक्तियों [पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट] की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु उपयुक्त क्षेत्र होने के कारण ही कन्नौज संघर्ष का क्षेत्र बना था।

हर्षवर्द्धन के शासन काल से ही कन्नौज पर नियंत्रण उत्तरी भारत पर प्रभुत्व का प्रतीक माना जाता था। अरबों के आक्रमण के उपरांत भारतीय प्रायद्वीप के अन्तर्गत तीन महत्वपूर्ण शक्तियाँ थी।

(i) गुजरात व राजपुताना के गुर्जर-प्रतिहार
(ii) दक्कन के राष्ट्रकूट
(iii) बंगाल के पालवंश

कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर लगभग 200 वर्षों तक इन तीन महाशक्तियों के बीच होने वाले संघर्ष को ही त्रिपक्षीय संघर्ष कहा गया है। इस त्रिपक्षीय संघर्ष में अंतिम सफलता गुर्जर-प्रतिहारों को मिला।

छठी शताब्दी ई० पूर्व में गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद ही राजनीतिक शक्ति के केन्द्र के रूप में पाटलीपुत्र का महत्व समाप्त हो गया। फलस्वरूप इसका स्थान उत्तर भारत में स्थित कन्नौज ने ले लिया।

त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत प्रतिहार शासक वत्सराज ने की जब उसने कन्नौज पर शासन करने वाले तत्कालीन आयुध शासक इन्द्रायुध को पराजित कर उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य जमाने का प्रयास किया।

Scanned with CamScanner

संघर्ष के प्रथम चरण में प्रतिहार नरेश- वत्सराज,
पाल नरेश - धर्मपाल
राष्ट्रकूट नरेश - ध्रुव
} में संघर्ष हुआ।

धर्मपाल को पराजित करने के उपरान्त वत्सराज को ध्रुव से संघर्ष हुआ, इसमे ध्रुव विजयी रहा।
ध्रुव उत्तर भारत में अधिक दिनो तक नही रुक सकें और वापस दक्षिण चले गए। राष्ट्रकूट नरेश से हारने के उपरान्त कुछ समय तक प्रतिहार शासक अनुत्साहित रहे। इस समय का लाभ उठाकर पाल नरेश धर्मपाल ने कन्नौज पर आक्रमण कर इन्द्रायुध को पराजित कर अपने संरक्षण में चक्रायुध को कन्नौज की राजगद्दी पर बैठाया।

पाल शासकों की यह सफलता प्रतिहार शासकों के लिए असहनीय थी। अतः वत्सराज के पुत्र नागभट्ट द्वितीय नें कन्नौज पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया।
धर्म पाल को पराजित करने के कुछ दिन बाद ही नागभट्ट II को राष्ट्रकूट शासक गोविन्द III से पराजित होना पड़ा। इस पराजय से गुर्जर-प्रतिहारों की शक्ति काफी क्षीण हो गई।

कलांतर मे पाल शासक धर्मपाल की मृत्यु के उपरान्त एक बार फिर नागभट्ट II ने कन्नौज पर अधिकार करने का प्रयास किया, वह सफल भी हुआ और उसने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।

प्रतिहार शासक भोज के उपरांत महेन्द्रपाल शासक बना, जिसने बंगाल पर विजय प्राप्त किया था। उसके पश्चात महिपाल के समय तक पालों की शक्ति का अंत हो चुका था। अब यह युद्ध- प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के बीच हुए।
कन्नौज पूर्ण रूप से प्रतिहारों के अधिकारों मे आ गया।

Ashish